महावीर स्वामी का भजन

हे वीर तुम्हारे द्वारे पर, एक दर्श भिखारी आया हैं।
प्रभु दर्शन भिक्षा पाने को, दो नयन कटोरे लाया है।।

नहीं दुनियाँ में कोई मेरा हैं, आफत ने मुझको घेरा है।
प्रभु एक सहारा तेरा हैं, जगने मुझको ठुकराया है।।

धन दौलत की कछु चाह नहीं, घर बार छुटे परवाह नहीं।
मेरी इच्छा तेरे दर्शन की, दुनियाँ से चित्त घबराया हैं।।

मेरी बीच भँवर में नैया हैं, बस तूही एक खिवैया है।
लाखों को ज्ञान सिखा तुमने, भवसिंधु से पार उतारा है।।

आपस में प्रीत व प्रेम नहीं, तुम बिन अब हमको चैन नही।
अब तो तुम आकर दर्शन दो, त्रिलोकीनाथ अकुलाया है।।

जिनधर्म फैलाने को भगवन, कर दिया हैं तनमन धन अर्पण।
नवयुवक मण्डल अपनाओ, सेवा का भार उठाया है।।